PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE 6

' समय सरगम ' उपन्यास का तात्त्विक विवेचन

डॉ. भरत ए. पटेल

हिन्दी विभाग ,

विजयनगर आर्ट्स कॉलेज |

गुजरात भारत

समकालीन हिन्दी कथाकारों में कृष्णा सोबती का स्थान काफी महत्वपूर्ण है | सन् २०१७ में उत्कृष्ट साहित्य-सर्जन के लिए उन्हें साहित्य के क्षेत्र में दिये जानेवाले सर्वोच्च सम्मान ' ज्ञानपीठ पुरस्कार ' से गौरवान्वित किया गया | वे हिन्दी कथा-साहित्य की ऐसी लेखिका हैं ,जो कम लिखती हैं पर विशिष्ट लिखती हैं | जीवन की वास्तविकता को नए वैचारिक धरातल पर देखने-परखने का प्रयास उनके लेखन की प्रमुख विशेषता है | ' समय सरगम ' उनका एक अनूठा उपन्यास है ,जिसमें वरिष्ठ नागरिकों की जिंदगी को जीए हुए के साक्ष्य द्वारा मार्मिक अभिव्यक्ति मिली है | प्रस्तुत उपन्यास का तात्त्विक विवेचन करना मेरा अभीष्ट है |

कथावस्तु :

' समय सरगम ' उपन्यास में घटनाएँ बहुत कम हैं | वरिष्ठ नागरिकों की जीवनचर्या का जीवंत चित्रण और उनकी समस्याओं का मार्मिक और संवेदनपूर्ण आलेखन लेखिका का मूल अभिप्रेत है | इस उपन्यास में बुजुर्गों की जिंदगी के दो पक्षों का यथार्थ वर्णन हुआ है | एक में परिवार से दूर रहकर अकेले जिंदगी जीनेवाले वरिष्ठ नागरिकों का आलेखन है और दूसरे में परिवार के साथ रहकर उपेक्षा और तिरस्कार सहते हुए बुजुर्गों की जिंदगी का वर्णन हुआ है | पहले प्रमुख पक्ष को जीवंतता प्रदान करनेवाले मुख्य पात्र हैं- आरण्या और ईशान | ये दोनों मित्र होने के बावजूद उनके विचार और आदतें बहुत कुछ अलग हैं | आरण्या मनमानी जिंदगी जीनेवाली एक ऐसी बुजुर्ग औरत है जो परिवार से दूर रहने पर भी अपने अकेलेपन से दु:खी नहीं है | वह इस अकेलेपन में अपने आप से साक्षात्कार करती है , अपने स्व का विकास करती है और भरपूर आराम करती है | आरण्या और ईशान एक ही अपार्टमेंट के अलग-अलग ब्लोकों के फ्लेटों में अकेले रहते हैं | कभी साथ में सैर करने जाते हैं ,कभी साथ में खाना खाते हैं | ईशान को परिवार से बिछड़ने का

दु:ख जरुर है ,पर भाग्य में परिवार का इतना ही सुख लिखा होगा यह मानकर जीते हैं | सवेरे-सवेरे स्नान,ईश्वर –स्तुति और पैदल चलना उनका नित्यक्रम है | वे भारतीय संस्कृति की परिवार व्यवस्था में विश्वास रखते हैं | नई पीढ़ी अपनी जिंदगी में पुरानी पीढ़ी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करती यदि बुजुर्ग व्यक्ति कमाती नहीं तो उसे घर के मामलों में दखल देना का कोई अधिकार नहीं | लेखिका ने इस ओर इंगित किया है कि आज के भारतीय समाज में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं , परिवार में न कमानेवाले माँ-बाप बोझ बनते जा रहे हैं | विदेशों में रहनेवाले पुत्र-पुत्रियों का जरुरत पड़ने पर माँ-बाप को पास बुलाना उनकी स्वार्थपरता का ही परिचायक है | आरण्या को यह बात बहुत खटकती है |

आधुनिक युग में वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों ने मनुष्य की भौतिक सुविधाओं को बढाया है | महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागती-दौड़ती जिंदगी स्व-केन्द्रित होती गई है | प्राचीन सभ्यता और मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है | पारिवारिक संबंधों में दरारें उभर रही हैं | युवा पीढ़ी की स्व-केन्द्रीयता और स्वार्थपरता के कारण समाज में ' बूढ़े माँ-बाप की सेवा ' का परंपरागत संस्कार मिटता जा रहा है | वृद्धास्त्रमों और अकेले रहनेवाले बुजुर्गों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी है | लेखिका ने अकेले जीवनयापन करनेवाले बुजुर्गों की जिंदगी का उल्लेख इस प्रकार किया है - ' अकेलों के समुदाय की गिनती अब पहले से कहीं ज्यादा ! इनकी अपनी ही कठिनाइयाँ और अपनी ही सहूलियतें | परिवार से अलग-थलग अपनी आर्थिक क्षमताओं को संयम से इस्तेमाल करते हुए यह 'अकेले' भी अपने ही ढंग से अपने को सँवारते चले जाते हैं | बहुत-सी पारिवारिक चिंताओं से अपने को बचाये लिए जाते हैं | बूंद-बूंद अर्जित अपनी शक्तियाँ ,रोग ,बीमारी और संकट के लिए संभालकर अपने में घिरे रहते हैं | समय-समय पर बच्चे-बूढों के संस्थानों की मदद |

अकेले , अकेलों की अपनी जीवन-शैली है | करते रहते हैं स्व-निर्माण और आराम | परिवार का कोलाहल ,शोर ,तनाव ,ऊंच-नीच और तनातनी आसपास नहीं | फिर भी पुरानी छाँह से पितृ पाँव , मातृ हाथ , भ्रातृ और भगिनी भाव का गहरा आस्वादन जब कभी भी मिलता हो | उमड़ आता है स्नेह माँ की ममता के लिए और पिता के संयम में पगे प्यार के लिए | " [२] प्रस्तुत उपन्यास में परिवार के साथ रहते हुए उपेक्षा , तिरस्कार और अपमान सहकर जिंदगी को घसीटनेवाले बुजुर्गों की स्थितियों का जीवंत और मार्मिक चित्रण हुआ है - " बूढ़े सयानों की टोली हर शाम इस छोटे–से बगीचे में पहले टहलती है ,फिर बतियाती है----नि:संदेह हम पुराने हैं , फिर भी यह समय निस्तेज नहीं | घर से बाहर निकलते हैं | भाँति-भाँति की सब्जियां-फल खरीदकर लौटते हैं परिवार के कोलाहल के सान्निध्य में ,जो कभी स्वयं हमने अपने परिश्रम से गूंथा था | कामकाज से छुट्टी पा इसे भोगना भी सुख है जीने का | बहू-बेटों की नजरों में रुखाई ,अवज्ञा ,उदासीनता कुछ भी दीखते रहें – परिवार के साथ होने का सुख है गहरा | रहती है आत्मा शांत कि सभी कोई पास है --- यह अलग बात है कि परिवारों में बड़े-बूढों के अधिकार कमतर और 'हाँ' 'न' का संकोच ज्यादा है | पीढ़ी सरक जाए तो अख्तियार खुद ही आधे-पौने हो जाते हैं | बहू-बेटों की मर्जी-मुताबिक चलना है | वह जैसा चाहे ,रहते रहें | " [३] दमयंती ,कामिनी और प्रभुदयाल की कथाएँ उपन्यास के

अभिप्रेत को बल देती हैं | इस प्रकार ' समय सरगम ' में कथा के तन्तु सूक्ष्म होते हुए भी पाठक की उत्सुकता बनी रहती है |

पात्र-सृष्टि :

किसी भी कथा-साहित्य में घटनाओं का वहन पात्र करते हैं | पात्रों के अभाव में कथा की कल्पना भी नहीं की जा सकती | इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं – आरण्या और ईशान | ये दोनों मित्र होने के बावजूद उनके विचार और आदतें बहुत कुछ अलग हैं | आरण्या मनमानी जिंदगी जीनेवाली एक ऐसी बुजुर्ग औरत हैं जो परिवार से दूर रहने पर भी अपने अकेलेपन से दु:खी नहीं हैं | वह इस अकेलेपन में अपने आप से साक्षात्कार करती हैं ,अपने स्व का विकास करती हैं और भरपूर आराम करती हैं | वह ईशान से कहती हैं – ' हम लोग अकेले रहते हैं तभी इस मौन का पाठ सुन सकते हैं---आज का सच यह है कि परिवार के ऊपरी ढाँचे की संगत और तनावों से दूर यह शांत अब मुझे सुखकर लगता है | " [४] आरण्या स्पष्ट मानती हैं कि परिवार में व्यक्ति जब तक कमाकर लाता है तब तक उसका स्वामित्व बना रहता है | जब उसका कमाना बंद हुआ , उसके अधिकार और स्वामित्व धीरे-धीरे मिटने लगते हैं | वह धीरे-धीरे बाहर का आदमी होने लगता है – ' संयुक्त परिवारों में भी परिवार का स्वामित्व व्यक्ति की उत्पादक हैसियत से जुडा है | भाई-भतीजे सगेवालों के मुँह ताक रहे हैं कि तेवर कुछ ढीले पड़े ,गुस्सा छने तो कुछ बात बने | ' [५] आरण्या जब ईशान से यह कहती हैं कि ' मैं अपनी खुद की निकटता में , सोहबत में कभी उदास नहीं होती तो ज्यादा सही होगा | ' इस पर ईशान व्यंग्य से हँसते हुए कहते हैं – अद्‌भुत ! तब वह प्रत्युत्तर देती हैं - " ईशान अद्‌भुत कुछ भी नहीं है | इतनी –सी समझ , इतना-सा जान लेना काफी है कि जिस दृश्य में ,घटना में आपकी साझेदारी नहीं – आप उसके बाहर हैं | " [६] इस कथन का मतलब यह है कि नई पीढ़ी अपनी जिंदगी में पुरानी पीढ़ी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करती यदि बुजुर्ग व्यक्ति कमाती नहीं तो उसे घर के मामलों में दखल देना का कोई अधिकार नहीं | लेखिका ने इस ओर इंगित किया है कि आज के भारतीय समाज में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं ,परिवार में न कमानेवाले माँ-बाप बोझ बनते जा रहे हैं | विदेशों में रहनेवाले पुत्र-पुत्रियों का जरुरत पड़ने पर माँ-बाप को पास बुलाना उनकी स्वार्थपरता का ही परिचायक है | आरण्या को यह बात बहुत खटकती है | ईशान के यह कहने पर कि ' परिवार सुरक्षा का एक नीड है और एक-दूसरे को सहारा देनेवाली एक धनी छांह भी | ' तब वह कहती हैं – " हाँ ,वह भी एक दिलचस्प स्थिति है गये बरस हम अमरीका गए थे | बड़े के पास | उससे पहले लन्दन मंझली बहू के यहाँ | उसका दूसरा बच्चा पहुँचनेवाला था | बेटी ने बुलाया तो उसके पास चले गए | " [७] यह कथन जरुरत पर आधारित पारिवारिक संबंधों के खोखलेपन को उजागर करता है |

ईशान भारतीय डाक सेवा से रिटायर हुए हैं | उन्हों ने भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं को अच्छे नंबरों से पास की थीं ,पर जम्मु –कश्मीर में जन्मे होने के कारण वे न तो आई.ए.एस. और न

आई.पी.एस. अधिकारी बन पाए | उन्हें पोस्टल सेवा ऑफर हुई और उन्हों ने स्वीकार कर ली | वे भारतीय संस्कृति में विश्वास रखनेवाले भाग्यवादी व्यक्ति हैं | आरण्या और ईशान एक ही अपार्टमेंट के अलग-अलग ब्लोकों के फ्लेटों में अकेले रहते हैं | कभी साथ में सैर करने जाते हैं ,कभी साथ में खाना खाते हैं | ईशान को परिवार से बिछड़ने का दु:ख जरुर है ,पर भाग्य में परिवार का इतना ही सुख लिखा होगा यह मानकर जीते हैं | सवेरे-सवेरे स्नान , ईश्वर–स्तुति और पैदल चलना उनका नित्यक्रम है | वे भारतीय संस्कृति की परिवार व्यवस्था में विश्वास रखते हैं | वे कहते हैं – ' पारिवारिक संबंध गहरे होते हैं | छोटे-छोटे दबावों के बावजूद उनमें बहुत कुछ अच्छा और मूल्यवान होता है |' [८]

ईशान अत्यंत संवेदनशील पुरुष हैं | वे जब कभी अतीत की यादों में खो जाते हैं ,तब अपने बेटे लवी का सम्हालकर रखा हुआ सामान खोल बैठते हैं | कलर बॉक्स ,पेस्टल एल्बम ,ज्यामिती बॉक्स ,कैमरा ,शतरंज के गोटे ,लूडो ,स्काउट युनिफार्म , कैप , सीटी ,स्कूल बैग ,फूलबूट,राईटिंग पेड ,कुछ लिखे हुए पत्र आदि को देखकर उस अकेले घर में एक बच्चा जीवंत हो उठता है – " जब कभी खोलता हूँ – सोचता हूँ ,रखने से फायदा और फिर समेटकर वहीँ रख देता हूँ | जब कभी उसकी स्कूल यूनिफार्म छूता हूँ तो लगता ही नहीं कि वह अब इस घर में नहीं है | जानता हूँ अगर यहाँ नहीं तो कहीं-न-कहीं है जरुर | जब गया तो तेरह का था , अब तो किसी का पिता बन चुका होगा | " [९] ईशान के लिए बेटे की यादें अविस्मरणीय हैं |

वे अपने इस खालीपन को भरने के लिए घर में कबूतर पाले हुए हैं , कुछ पौधे लगाये हुए हैं | वे सामाजिक संबंधों में अब भी विश्वास करते हैं | अपने पुराने परिचितों की खोज-खबर लेते हैं , उनकी यथासंभव मदद भी करते हैं | उन्हों ने अपने भीतरी अकेलेपन को दूर करने के लिए बाल-गृह की दो बच्चियों – अपराजिता और सृष्टा को कुछ सालों के लिए दत्तक ली हैं ,वे उनके संरक्षक पिता बने हैं | इसके लिए उन्हों ने संस्थान को चेक भेजा था | इस सन्दर्भ में वे कहते हैं – " इन बच्चियों को अपना समझ अच्छा महसूस कर रहा हूँ | परिवारों में बच्चों को समेट लेने की यह योजनाएँ सुखकर हैं | " [१०] ईशान उद्यमी पुरुष हैं | वे उम्र के हिसाब से खाने-पीने के कुछ अपने बनाये नियमों का पालन करते हैं | चाय और दोपहर का खाना खुद ही बनाते हैं | अनेक बार आरण्या को अपने हाथों से पकाकर खिलातें हैं | वे कुछ-न-कुछ करते रहनेवाले इन्सान हैं |

दमयंती ,कामिनी और प्रभुदयाल गौण पात्रों के अंतर्गत आते हैं | दमयंती कभी ईशान की पडोसी रही है | वह खूब मनमौजी ,बहुत आकर्षक ,चुलबुली और चुस्त हुआ करती थी | कीमती परफ्यूम उनकी पहचान थी | पति संजीदा ,कद्रदान और भले आदमी थे , अपनी पत्नी पर जान देते थे | उनकी मृत्यु के बाद दमयंती अपना ज्यादा वक्त साधु-महात्माओं के बीच गुजारती है | ऋषिकेश में एक साध्वी इनकी गुरू हैं | उनकी परेशानी उन्हीं की जबान में जब वे आरण्या से बात करती है – " मैं तुम्हारी तरह अकेली होती तो क्यों परेशान होती | बच्चे साथ रह रहे हैं | मेरे घर में – मेरा किचन चल रहा है | खर्चा मैं कर रही हूँ | और मैं अपने कमरे में अकेली पड़ी रहती हूँ | बिना मेरी इजाजत मेरा सामान इधर से उधर करते रहते हैं |

आरण्या मैं बहुत दु:खी हूँ | पीछे आश्रम गई तो माधो को धमकाते रहे | बताओ , ममा लोकर की चाबी कहाँ रखती हैं ... मैं वहाँ (बैठक में)बैठ नहीं सकती , मेरे मेहमान नहीं बैठ सकते जबकि वहाँ का सब फर्नीचर ,साज-सामान मेरा अपना बनाया हुआ है | " [११] महीने भर बाद दमयंती की मृत्यु हो जाती है , जिसके पीछे उनके बेटों का हाथ था |

कामिनी की कथा अत्यंत करुण है | सुन्दर , फुर्तीली और चुस्त कामिनी बनारस और इलाहबाद में पढ़ी थी , उसकी पोस्टिंग कभी लन्दन में थी | घर की दीवारों पर लटकती पेंटिंग्स और देश-विदेश के स्मृति-चिह्न उसकी वैभवपूर्ण और प्रभावशाली जिंदगी के परिचायक हैं | ईशान की पत्नी लक्ष्मी और कामिनी गहरी दोस्त थीं | साथ-साथ पढ़ाती रही थीं | लक्ष्मी के जाने के बाद ईशान और कामिनी के बीच कुछ उभरा था , जो सहज था | फिर न जाने दोनों और किसी अविश्वास के बोझ तले कुछ अटपटा-सा होकर रह गया | आज कामिनी अनेक बीमारियों का घर बन गई है | भाई-भाभी मर्ज की नहीं, परन्तु नींद की गोलियों का इंतजाम करते हैं | वे उसका मकान बेचकर कामिनी को अस्पताल में भर्ती करा देना चाहते हैं |

तीसरा गौण पात्र प्रभुदयाल का है , जिनके परिवार में तीन बेटे और बहुएँ हैं | अलमारी और कमरे की ताली सदैव अपने गले में बंधी रहती है | उनका कृपण स्वभाव लड़कों को खलता था | प्रभुदयाल अक्सर मेरठ में देखे जाते थे , यह बात उड़ते-उड़ते लड़कों तक पहुँच गई थी। एक दिन तीनों बेटे पिताजी के गले से ज़बरदस्ती ताली निकाल लेते हैं और पूछते हैं - ' आपने मेरठ में एक घर गांठ रखा है। कौन है वह औरत ? ' हफ्ते बाद प्रभुदयाल फिर मेरठ में नजर आए वे साड़ी और मिठाई का डिब्बा लेकर कलावती के पास पहुँचे। उसके हाथ की फुली हुई फुलकिया खाकर खुश हुए। सोचने लगे , कैसी डाह है लड़कों को इसके होने से। सादी कर ही लेता तो लौंडे क्या कर सकते थे ?' लालजी को सूचना दी कि जल्दी किराए का यह घर छोड़ देंगे और अगले महीने अपने घर में गृह प्रवेश। परन्तु मेरठ से लौटते समय वे रास्ते में ही रह गए। गला घोंटकर उनकी हत्या कर दी गई थी और शब मिला हिंडन से कुछ किलोमीटर आगे छप्पर के किनारे इमली के पेड़ तले।

इनके अतिरिक्त किशोर , बहादुर , माधो , खूकू आदि पात्र अति गौण पात्रों के अंतर्गत आएँगे | ये पात्र कथा और प्रमुख पात्रों के निरूपण को साहजिक और जीवंत बनाने में अपना योगदान देते हैं |

संवाद :

पात्रों के आपसी वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहते हैं | ऐसे तो संवाद नाटक के प्राणतत्त्व माने जाते हैं , परंतु कथा-साहित्य में इसके प्रयोग से रोचकता बढ़ती है | संवादों से कथा तो आगे बढ़ती ही है , पात्रों के अंतर्बाहय व्यक्तित्त्व का भी उद्घाटन होता है | ' समय सरगम ' उपन्यास अनेक मार्मिक और अर्थपूर्ण संवादों से भरा पड़ा है | एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है –

" ईशान कुछ क्षण आरण्या को जाँचते रहे हों जैसे | फिर कहा – तीन बैडरूम फ्लैट के बाद एक कमरे में चला सकेंगी ?

ईशान , मैं निपट मध्यवर्ग हूँ | और इसमें गर्व महसूस करती हूँ | सिखाया गया है कि जैसा वक्त देखो , उसके अनुरूप कदम उठाओ |

ईशान ने हर शब्द को तौला हो – आरण्या , जो कहने जा रहा हूँ उसे हँसी में मत उड़ाना | अगर मैं कहूँ कि एक कमरा , एटैच बाथरूम –एक बालकनी तुम्हारे लिए मेरे फ्लैट में ही मौजूद है |

हूँ-हूँ ... ईशान , मुझे सोचने को एक दिन चाहिए होगा | कल सुबह तक बता सकूँगी | " [१२] यहाँ आरण्या द्वारा अपना फ्लैट किसी मजबूरीवश बेच देने पर वह बेघर हो जाती है , तो ईशान उसे गहरी संवेदना जताते हुए उपर्युक्त कथन कहते हैं | ऐसे अनेक संवाद इस उपन्यास को सहज , मार्मिक और जीवंत बनाते हैं |

परिवेश :

देशकाल और वातावरण को परिवेश के अन्तर्गत समाहित किया जा सकता है | उपन्यास में निरूपित मूलकथा और उपकथाओं का कोई एक समय होता है , घटनाओं का कोई स्थान होता है | उपन्यासकार को जिस समय की , जिस स्थान और समाज की घटना निरूपित करनी होती है , उसके अनुरूप वातावरण या परिवेश की सृष्टि करनी पड़ती है | ' समय सरगम ' उपन्यास में बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों के भारतीय समाज का चित्रण हुआ है | विशेषत: इसमें भारत की राजधानी दिल्ली का महानगरीय समाज जीवंत हो उठा है | इस महानगरीय समाज में वरिष्ठ नागरिकों की जीवनचर्या और उनकी समस्याओं का हृदयस्पर्शी निरूपण किया गया है | इसमें दो प्रकार के वरिष्ठ नागरिकों के जीवन का अंकन किया गया है – १. जो परिवार से दूर रहकर अकेले जीवनयापन करनेवाले वरिष्ठ नागरिक २. परिवार के साथ रहकर उपेक्षा , तिरस्कार और अपमान के साथ जीवन जीनेवाले वरिष्ठ नागरिक | महानगरीय भारतीय समाज के अन्तर्गत परिवारों में टूटते पारिवारिक सम्बन्ध , अंधी स्वार्थलिप्सा ,आर्थिक दबाव ,अनास्था , अविश्वास , धोखाधड़ी , आर्थिक तराजू में तुलते खून के रिश्ते , असहिष्णुता आदि का बड़ा ही यथार्थपरक और संवेदनापूर्ण चित्र उकेरने में लेखिका सफल सिद्ध हुई है |

भाषा-शैली :

भाषा के अभाव में साहित्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती | उपन्यास में समय , स्थान या प्रदेश , समाज , परिवेश और विषय के अनुरूप भाषा अपना रुख बदलती रहती है | इसमें संवादों की भाषा पात्रों के अनुकूल होनी चाहिए | उपन्यास में निरूपित समाज के अनुरूप भाषा-प्रयोग , शब्द-चयन , मुहावरें , कहावतें आदि का यथोचित प्रयोग कथा-कृति को साहजिक और स्वाभाविक बनाता है | आलोच्य उपन्यास में महानगरीय परिवेश का आलेखन हुआ है , अत: इसमें अंग्रेजी शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है , जो स्वाभाविक ही है | यथा – अंग्रेजी शब्द : ग्रिल , ऑक्सीज़न , टॉयलेट , विटामिन , ट्रैफिक , पार्क , मेडिकल इन्श्योरंस , लॉन , एंटीबायटिक्स , शू कंपनी , कैलेण्डर ,अपार्टमेंट्स , ब्लॉक , फ्लैट , कोलबेल , लिफ्ट , कटिंग्स , बॉक्स , किचन , पेस्टल एल्बम , ज्यामिती बॉक्स , क्लास फादर , टीचर , स्टीम , फाइल , ट्रैक , एयरपोर्ट , प्रोग्राम , टी बैग आदि | संस्कृत शब्द : अभिनीत , स्मृति , जीवित , मृतक , संतुष्ट , अर्जित , तिरोहित , मुकुट , आरक्षित , गंतव्य , द्वंद्व , अन्तर्मन , कल्पनातीत , चैतन्य , दुरांतरित , दक्षता , अद्वितीयता , पुनर्जन्म , निर्वाण , सुदृढ , नक्षत्र , श्रोता , अतिथि , दर्शक , यज्ञोपवीत , अनुशासन , अनुपस्थिति , निबिद्ध , आच्छादित , प्रशिक्षण आदि | उर्दू शब्द : मकबरा , गुंबद , इत्मीनान , नजर , कदम , रफ्तार , वक्त , पुराना , दुरुस्त , शायद , दाखिल , बेहिसाब , पैदल , लापरवाही , तराजू , खामोशी , इन्सान , हफ्ता , गुसलखाना , लिफाफा , मुक़ाबला , मुस्तैदी , इंतजार , परहेज , मिजाज आदि | इस उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरें इस प्रकार हैं – मीन-मेख निकालना , रास्ता काटना , ढाँढस बँधाना , तरस आना / खाना , तेवर चढ़ाना , आँखें चुराना , घपला होना , मिलीभगत होना , छाती पीटना ,मुंछों पर ताव देना ,मर-मरकर जीना , तितर-बितर हो जाना आदि |

शैली का अर्थ है – ढंग या रीति | उपन्यास लिखने के ढंग या रीति को शैली कहा जाता है | उपन्यासकार आवश्यकता अनुसार वर्णनात्मक , विवरणात्मक , पत्रात्मक , आत्मकथात्मक , नाट्यात्मक , व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग करता है | आलोच्य उपन्यास में वर्णनात्मक , विवरणात्मक , पत्रात्मक और संवाद शैली का प्रयोग किया गया है | इसमें ईशान के पुत्र लवी का अपने मामा के नाम पत्र , शून्यता के ईशान के नाम पत्र और ईशान का आरण्या के नाम पत्र आदि का प्रयोग मिलता है |

उद्देश्य : मनुष्य का हर कार्य प्राय: सोद्देश्य होता है | उपन्यासकार का भी अपने साहित्य-सृजन के पीछे कोई न कोई उद्देश्य निहित होता है | कथा-लेखक कोई एक विचार , आदर्श , संदेश , समस्या-निरूपण या

समस्या-निराकरण पाठकों तक पहुँचाना चाहता है | ' समय सरगम ' उपन्यास में परिवार से दूर रहकर जीवनयापन करनेवाले वरिष्ठ नागरिकों की जीवनचर्या , उनकी समस्याएँ , जीवन जीने की आजादी , मौनपाठ , समय की सुरीली सरगम सुनने का आनंद आदि की वास्तविक , मार्मिक और संवेदनापूर्ण अभिव्यक्ति लेखिका मूल उद्देश्य रहा है | साथ ही परिवार के साथ रहनेवाले वरिष्ठ नागरिकों की अपने ही परिवार में होती अवज्ञा , तिरस्कार , अपमान तथा अपने संकोच , समस्याएँ और हत्या तक की साज़िशों का हृदयस्पर्शी निरूपण भी लेखिका का उद्देश्य रहा है | लेखिका अपने इन दोनों प्रमुख उद्देश्यों की सुनियोजित , मार्मिक और जीवंत अभिव्यक्ति में सफल सिद्ध हुई हैं |

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती लिखित ' समय सरगम ' उपन्यास तात्त्विक समीक्षा में बिलकुल खरा उतरता है | इस उपन्यास की महाकाव्यात्मक अभिव्यक्ति काफी प्रभावात्मक सिद्ध हुई है | यह उपन्यास एक नए युगीन यथार्थ को अभिव्यक्ति देने में कारगर सिद्ध हुआ है |

संदर्भ-संकेत :

१. समय सरगम , पृष्ठ-१०७-१०८
२. वही , पृष्ठ-८९-९०
३. वही , पृष्ठ -६३
४. वही , पृष्ठ -६४
५. वही , पृष्ठ-६५
६. वही , पृष्ठ-६
७. वही , पृष्ठ-६३-६४
८. वही , पृष्ठ-२४-२५
९. वही , पृष्ठ-११४
१०. वही , पृष्ठ-७४
११. वही , पृष्ठ- १४७